

:

/

/

()

.....

.....

.....

•

.....

:

.....

:

.....

:

•

.....

:

.....

:

•

.....

:

.....

:

.....

:

.....

:

.....

.....

.....

.....

:

)

*

(*

(-)

ابنك الباحث

.

: ()

.

:

() :

.

()

:

: ()

:

.

):

)

(

(

· : ()

—

—

·

·

·

() () ()
() () ()
() ()
() () () ()

() ()
 ()
 ()
 () ()
 ()
 () () ()
 () ()
 () ()
 () ()
 ()
 () ()
 () ()
 ()
 ()
 ()
 ()

∴ ∴

. ∴ ∴) : (1)
) :

(
) : (2) .(∴

. ∴ ∴

.

∴

∴ .

∴

.

∴) ∴ (3)

(4) .(

.(. .)

.(. .)

.(. .)

	(
.	(
-	(
-	(

) :

:

(5)

.(
):

.

:

:(
(6)

:) :

(7)

.
.(
)

:

.

.

:

:

:

:

:

:

.(.)

-

(
(
(

:

:

:

.(

:

) : (8)

:

:

.

.

.

:

.

:

(9)

.(

)

.(

) :

(10)

()

.(.)

-

(

(

-

(

.() :⁽¹¹⁾ .(:
 (.() : :
 .(:
 :
 :
 () :
 .() : -
 . (

:

:

) :⁽¹²⁾

.(

) :

) :⁽¹⁴⁾

.⁽¹³⁾

:

(15)

:

) :

:

) :

.(.)

(

(

(-)

(

.(-)

(-)

(

) :

(16)

-

- (

) :

(

:

) : (17)

:

(
(

(18)

:

:

(19)

:

. (

. (

:

:

:

-

— (20)

(21)

:

(

(

.(22)
.

.(23)
.

) .(24)
()

.(

. ()
()
()

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

⋮

-

⋮

(25)

⋮

) : ()

.

(

(26)

:

ليالي لاقينا جذام وحميرا

(27)

:

أولئك إن يكن في الناس خير

(
(

(28)

:

:

والخيل في نقع العجاج أروم

(29)

:

.(-)

(
(

(30)

:

— (31)

.(- -)

(
(

(32) () -

:

وقرن قد رأيت لدى مكرّ

وأدعوهم وآتى من دعائي

.(33)

(34)

:

(
(

:

(35)

:

.(-) ((

) : (36)

...) : (37) (

(38) .()

:

:

(...

(39)

:

. ()
 . ()
 . ()
 . . - ()

زيداً باناً وراهم أنف

.(40)

) :.(41)

:

. - (

. - (

:(42)

:(43)

:(44)

- -

:(45)

عليها باید ما تکاد تطيعها

:(46)

(
(
(
(

)⁽⁴⁷⁾

.(

(48)

:

:

(49)

:

-

(
(
(
(

(50)

:

—

:

:

.

(

(51)

:

(52)

:

(53)

:

:

. /

. (
 . - (
 (

) : (54)

(

) :

(55)

.(

:

:(56)

)

:

. ()
. ()
. ()

) : (57)

.(

.(58)

(59)

:

(60)

:

. ((((

.(61)

_()

.(- -)

(
(62

-

:

:

:

.

:()

()

:

وما أدري وما عبدتُ تميمُ

()

:

) : ()

:

() .(

()

:

(64

(65

(66

(67

:

:

-

) ()

:

(

:

(⁶⁸

(⁶⁹

) : ()

:

()

:

:

()

:

(70

(71

(72

-

: ()

:

: - - ()

. (73
. (74

:

:

()

:

):

()

-

:()

(

:()

...

-

(75

(76

(77

) :

()

:

:

(
:()
:

ر الموت دور الرحي على القطب

(78

(79

(80

:

()

:()

:()

.

-

.

.

(81

(82

(83

:()

:

)

(

:

!

!

:

:()

()

:

(84

(85

(86

:

:

:

-

:

()

:()

.

(87

(88

() : () :

:

لئن كانت الدنيا أنالتك ثروة

:()

:

(⁸⁹)

(⁹⁰)

()

:

:

()

. (91
. (92

:

):

()

:

:

:

(

:()

:

()

(⁹⁴

(⁹⁵

()

:

:

:

:

-

. -

:()

()

:

()

:

(

(

(

) ()

:

.(

:()

:()

(
(
(

:()

:()

بين الأبارق من شيبان والأكم

()

:

تمنى لي الموت المعجل خالد

عزيزاً على عبس وذبيان زانده

(

(

(

:()

: ()

وعينك تبدي أن صدرك لي دوي

: ()

. . . .
.

-

(
(
(

) ()

: (

: ()

()

()

:

عن القطامي قولاً غير أفناد

(
(
(

:

وأفقر منها رحرحان فراكسا)

() : ()
)
) : () ()
() ()
) : () :
() .()
() .()

(
(
(
(
(

) () () :

() () :

:) () :

.(

:

:

() .(

- - :

:

خصوصاً يوم كُسر القوم روقُ

()

: ()

()

.(

:

()

(
(
(
(
(

كأن النبل بينهم جراد

تهيجه شامية خريق

() :

() :

() ()

()

()

()

()

()

:

):()

):()

(

(

(

(

(

(

(

(

(

(

()

(

) : ()

()

:

ولو خفت لنا الكلمي سرينا

()

: : ()

.

:

فقلنا احسني ملاً جهينا

:

:

:

:

فقلنا احسني ملاً جهينا

()

) : ()

()

(

(

(

(

(

: ()

: ()

:

:

() ()

() ()

.

()

()

()

()

()

()

(
.(-)

(
(
(
(
(
(
(
(

:

): ()

): ()

()

(

(

)

): ()

()

:

(

): ()

(

): ()

:

()

:

(

(

(

(

(

وأثر الديموع ولا تسامي

()

):

()

()

(

:

:

): ()

.(

:

(

:

) ()

:

()

()

()

(

):

.(

(
(
(
(
(

()

()

()

()

()

()

.

:

:

()

-

:

:

:

:

(

)

):

(

.
 .
 .
 .
 .
 .
 .
 .
 .
 .

(
(
(
(
(
(
(
(
(
(

()

-

:

()

)

:

(

(

):

:

()

(

.

()

-

(

):

:

(
(
(
(

فجوة بشائم طلاء مَحِيلا

) ()

-

() (

:

()

-

:

(
(
(

:

-

()

()

()

.

(

(

(

:

:

): ()

(

:

.

:

-

)

:(

):

() (

:()

: ()

. (

. (

. (

. (

;()

;()

;()

;()

.

:

-

):

;()

(

. ()
. ()
. ()
. ()
. ()

:()

: ()

:()

:

-

:()

:()

(
(
(
(
(

:()

()

:

()

:

: ()

(
(
(
(

() :) :

:() .(

:()

: ()

: -

()

:

(
(
(
(

:

:()

:

()

:

()

:

()

. ()
. ()
. ()
. ()

: ()

: -

:()

:()

:()

. ()
. ()
. ()
. ()

) : ()

:

:) :

:

(

:

()

(
(

:()

:

-

:()

:()

:

()

.

. ()
. ()
. ()
. ()

:

:

)

()

: (

()

.(

):

:

.(

()

.

:()

-

.

.

.

(

.

(

(

()

:

:()

:()

):()

: ::() () .(

. (

. (

. (

. (

. (

.(

:()

:()

:()

. ()
 ()
 ()

:()

:()

:()

:()

. ()
. ()
. ()
. ()

() ()
): ()

() .()
()

.

:()

:()

:

.() () ()

:() () ()

.....

.

.

(
(
(

:()

.

(
(

) : : () :

:

(

:

: -

:() ()

:() ()

:() ()

. ()
. ()
. ()
. ()

()

()

:

:()

()

:()

):

(

) :()

(

:()

:()

. ()
. ()
. ()
. ()
. ()
. ()

:

:

()

:()

:()

:

-

(
(
(

()

():

:()

()

:

:()

:()

. ()
. ()
. ()
. ()
. ()

:()

:()

:

-

:

: ()

.

): ()

:

(()

:

.....

. ()
. ()
. ()
..... ()
. ()

()

:

:()

.

· ()
· ()

:

:

-

-

:

(

:

-

:()

()

:

:

()

()

:

(

(

):

()

:()

(
(
(
(

() ()

.(

(:) :()

:

()

:

:

:

(

(

(

()

()

()

:

):

()

.(

.

:

-

:()

:

:

:()

(

(

(

()

:

:()

:

:

-

:

()

():

()

.

(
(
(
(

: ()

:

:

-

) :()

):(

:

(

:

()

()

:

(

(

.

:

-

: : ()) : ()

(: ()

() .

:

. (

. (

. (

. (

: :) :

:

(

()

:()

) :()

(

.

. ()
.

: :
) : ()

(

) : ()

.(

: ()

.(

:()

:

(

)

:

: :

) : ()

(

:()

)

(

:

(

. -

(

(

(

(

(

...

.

:

-

()

:

()

:

:()

):

()

(

-

-

:

()

. ()
. ()
. ()
. ()
. ()

.

:
()

:

()

:

:()

.

:

()

. ()
 . ()
 . ()
 . ()

. -

: ()

:()

: -

- -

:()

.

. ()
 ()
 ()

:()

:

-

:

.
()

.

:

:

):()

):

()

(

()

.(

.

.

.

.

.

(

(

(

(

(

) : ()

.(

: () ()

: () : () ()
: ()

: () : ()
(() ()

: :

(
(
(
(
(
(

(:):()):()

.(

() () - : ()

() () . ()

(
(
(
(

() () -
: (

() . -
:

() () -
:()

() () -
:

. ()
. ()
. ()
. ()

() () -
()
:

:

) () () /
:(

() () () /
:

) () () /
: (

·
·
·
·

(
(
(
(

—

.

:

.

:

.

:

.

—



	-
·	() -
·	() -
· · · · ·	() -
·	() -
·	-
·	() -
·	() -
· · · · ·	() -
·	-
· · · · ·	-
·	() -
·	() -
·	- -
·	-
·	-

. -

 . -
 () -
 . -
 . () -
 .
 () -

 () -
 . -
 () -
 . -
 () -

 () -
 .
 -
 .
 . () () () -
 .
 () -
 . -
 () -

 -
 . -

. () -
 .
 . -
 . () -
 () -
 . . () -
 () -
 () -
 () -
 () -
 : () -
 . - -
 -
 . -
 . -
 () -
 :
 . -
 - -
 -
 () -
 -

() -

.....

-

() -

-

() -

-

() -

() -

() -

.....

-

() -

() -

-

-

() -

.....



Abstract

This research talks about fair poems. It is divided into three chapters, each chapter includes a number of themes. Chapter one has the title “fair play” and includes three themes; the first of which talks about the meaning fair play in the Arabic language lexicon: the second theme talks about ‘fair play’ in Arabic poetry and its relation with wars and the Arab times; besides self frankness in description and explanation. As for the third theme, it talks about five aspects of ‘fair play’ in Arabic poetry; fair play in the case of triumph, fair play in the case of defeat, fair play in the case of equality, compared with these aspects linked with war, other two aspects not associated with war are : fair play in the case of affection and sincerity and fair play in the case of covetousness and hatred.

The second chapter is concerned with fair poems and includes two themes. The first abroach the number of a poets of fair poems, while the second identifies the position of fair play in fair poems.

The third chapter which is about a study of fair poems is composed of four themes; the first of which illustrates what a fair poem is composed of e.g erotic poetry; the second refers to arms; the third is about some customs associated with war in fair poems such as sending vanguard or sommoning the tribes name. The third theme is confined to metaphor in fair poems and in simile, metaphor, and metonymy. All this is associated with the meaning of fair play depending on the opinions of scholars and the collection of poetic quotations.